Lecture No 01 (01)

Name of the College – APSM College Barauni, Begusarai
Name – Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt. – A.I.H & C
Lession / Plan for class – B.A, AIH & C (H) – part-I – paper II
Date – 16-04-2021
Name of the topic – (Educational Institution: Taxila)

प्राचीन शिक्षा केन्द्र :- तक्षशिला →

विद्या केन्द्र तक्षशिला सातवीं शताब्दी ई.पू. में ख्याति प्रमुख शिक्षा - केन्द्र के रूप में दूर - दूर तक ख्याति व्याप्त हो गई, जिसका श्रेय वहाँ के आचार्यों को है। वहाँ विद्या प्रमुख आचार्यों की बड़ी प्रसिद्धि थी और उनके नाम का ही यह प्रभाव हुआ कि सहस्त्रों मील दूर के प्रदेशों से जिज्ञासुजन अपने प्राणों की परवाह न कर तक्षशिला पहुँचने लगे। जातकों में उल्लेख मिलता है कि समग्र भारतवर्ष के क्षत्रिय एवं ब्राह्मण कुमार शिल्प सीखने के लिए तक्षशिला के आचार्यों के पास जाते थे। वाराणसी, राजगृह, मिथिला, उज्जैनी आदि सुदूर नगरों विद्यार्थीगण तक्षशिला पहुँच जाते थे। कोशल राज्य से भी विद्यार्थी वहाँ जाते। कोशल नरेश प्रसेनजीत, मगध के विख्यात वैद्य जीवक और वैयाकरण पाणिनि, आचार्य कौटिल्य तथा सम्राट चन्द्रगुप्त तक्षशिला के स्नातक थे। बौद्ध-पिटकों में जिस प्रकार तक्षशिला का उल्लेख उपलब्ध होता है उससे प्रतीत होता है कि वह अपने समय का सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त विद्याकेन्द्र था। वस्तुत:

P.T.O.

तक्षशिला में आधुनिक महाविद्यालय या विश्वविद्यालय कोई शिक्षण संस्था नहीं थी। वहाँ तो विद्वानों का आवास संस्था था, जहाँ आचार्य अपने वरिष्ठ शिष्यों से सहयोग शिक्षण कार्य सम्पन्न करते थे। वहाँ न तो किसी आचार्य के शिष्यों की निश्चित संख्या थी और न अध्ययन की कोई निश्चित अवधि ही। जितने विद्यार्थी मिल जाते। आचार्य उन्हें विद्यादान देते। जब तक उनकी शिक्षा पूर्ण नहीं हो जाती, विद्यार्थी गुरु के पास रहते। जातकों में उदाहरण मिलते हैं कि तक्षशिला में दिशाप्रमुख आचार्य पाँच-पाँच सौ विद्यार्थियों को पढ़ाया करते थे। एक आचार्य के पाँच सौ शिष्य का उल्लेख परम्परागत शैली के कारण मिलता है। अतः इस संख्या को विशेष महत्व देना आवश्यक है। एक जातक में उल्लेख मिलता है कि एक आचार्य 103 राजकुमारों को धनुर्वेद की शिक्षा प्रदान कर रहे थे। इस संख्या में सत्य का आभास मिलता है और इससे यह अनुमान लगाना आसान ही नहीं सही होगा कि तक्षशिला के प्रमुख आचार्यों से शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या लगभग एक-एक सौ की रही होगी। शिक्षण कार्य के लिए आचार्य कुछ का भी सहयोग लेते होंगे जो वस्तुतः उनके वरिष्ठ शिष्य होते होंगे।

तक्षशिला में अध्ययन करने के लिए यह आवश्यक नहीं था कि सभी विद्यार्थी गुरुकुल में ही वास करते। अनेक राजकुमार अपने रहने की व्यवस्था स्वयं ही करते थे। परन्तु यह राजकुल के विद्यार्थियों के लिए ही संभव था। P.T.O.

तक्षशिला में आधुनिक महाविद्यालय या विश्वविद्यालय जैसी कोई शिक्षण - संस्था नहीं थी। वहाँ तो विद्वानों का आवास ही जैसा था, जहाँ आचार्य अपने वरिष्ठ शिष्यों के सहयोग से शिक्षण - कार्य सम्पन्न करते थे, वहाँ न तो किसी आचार्य के शिष्यों की निश्चित संख्या थी और न अध्ययन की कोई निश्चित अवधि थी। विद्यार्थी मिल जाते, आचार्य उन्हें विद्यादान देते, जब तक उनकी शिक्षा पूर्ण नहीं हो जाती। विद्यार्थी गुरु के पास रहते। जातकों में उदाहरण मिलते हैं कि तक्षशिला में दिशाप्रमुख आचार्य पाँच - पाँच सौ विद्यार्थियों को पढ़ाया करते थे। एक आचार्य के पाँच सौ शिष्य का उल्लेख पारम्परागत शैली के कारण मिलता है। अतः इस संख्या को विशेष महत्व देना आवश्यक है। एक जातक में उल्लेख मिलता है कि इस संख्या में सत्य का आभास मिलता है, और इससे यह अनुमान लगाना सही होगा कि तक्षशिला के प्रमुख आचार्यों से शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या लगभग एक - एक सौ की रही होगी। शिक्षण कार्य के लिए आचार्य कुछ शिक्षकों का भी सहयोग लेते होंगे जो वस्तुतः उनके वरिष्ठ शिष्य होते होंगे।

तक्षशिला में अध्ययन करना महंगा पड़ता था, क्योंकि यह उच्च शिक्षा केन्द्र था, और किसी विशेष विषय में विशिष्टता प्राप्त करने के उद्देश्य से ही वहाँ कोई विद्यार्थी जाता था जो जिज्ञासु छात्र बहुत दूर से वहाँ जाते, उनके

P.T.O.

लिए वहाँ की शिक्षा महँगी पड़ती थी ; परंतु वहाँ
की मुहर लग जाने के पश्चात किसी की योग्यता
में संदेह करने का साहस कौन करता ? अतः
वहाँ के स्नातक होने के लोभ का संवरण
भी नहीं किया जा सकता था। धनवानों के लिए
तक्षशिला में अध्ययन करना कोई बड़ी समस्या
नहीं थी। पर निर्धनों के लिए कुछ दिक्कतें थीं।
प्राचीन भारत में मेधावी निर्धन छात्रों के मार्ग
में भी ऐसी कोई दुर्लंघ्य रुकावट नहीं आती
थी कि वह विद्याध्ययन से वंचित रह जाता।
तक्षशिला में पढ़ने वाले धनाढ्य छात्र एक
सहस्र कार्षापण तक गुरुदक्षिणा दिया करते थे
परंतु निर्धन छात्र इतनी बड़ी धनराशि देने में
असमर्थ होने के कारण श्रम के रूप में गुरुदक्षिणा
चुकाते। गुरुदक्षिणा की राशि संग्रह करने के
लिए कई विद्यार्थियों को भिक्षा का सहारा
लेना पड़ता था।

मेधावी छात्रों को विद्याध्ययन
से वंचित न होना पड़े, इस उद्देश्य से उन्हें
राजकीय प्रोत्साहन प्रदान करने के भी उदाहरण
मिलते हैं। राजकीय वृत्ति पर अनेक छात्रों ने
तक्षशिला में शिक्षा प्राप्त की। वे प्रायः राजकुमारों
के साथियों के रूप में वहाँ भेजे जाते थे।
वाराणसी और राजगृह के राजपुरोहित-पुत्र
युवराजों के संग तक्षशिला में अध्ययनार्थ गये
थे। ऐसे उदाहरण मिलते हैं। कि होनहार

P.T.O.

युवकों को राज्य के व्यय से उच्च शिक्षा के लिए तक्षशिला भेजा गया। राजकीय प्रोत्साहन के साथ सामाजिक वातावरण का भी शिक्षा के प्रसार में बड़ा हाथ रहा है। प्राचीन भारत में धनी तथा निर्धन दोनों को अपनी प्रतिभा के विकास का अवसर मिला। अन्तर सिर्फ इतना अवश्य था कि धनी की अपेक्षा निर्धन छात्र को अधिक परिश्रम करना पड़ता था, परन्तु बाद में यदि उनके उत्साह, लगन और जिज्ञासा का अभाव नहीं पड़ता, तो उन्हें अग्रसर होने का मार्ग उन्मुक्त मिलता।

शिक्षा के विषय — (6) होते थे।

प्राप्त प्रमाणों से प्रतीत होता है कि उन दिनों 6 प्रमुख विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती थी। ये विषय थे-

(1) वेद (2) वैदिक साहित्य
(3) षड्वेदांग, अर्थात शाखा छन्द, व्याकरण, निरुक्त, कल्प तथा ज्योतिष
(4) ब्राह्मण संहिता और उपनिषद
5, गृह्यसूत्र तथा धर्मसूत्र
6, अन्य विषय — सूत्रों के अतिरिक्त का साहित्य व्यापक है। यहाँ से सम्बद्ध विषय के साहित्य का विकास हुआ, जिसका नाम पड़ा प्रयोग। धर्मविधियों का पद्यमय वर्णन करने वाला साहित्य कारिका कहलाया वैदिक अनुक्रमणी का भी निर्माण हुआ।

P.T.O.

(6) लौकिक साहित्य — अर्थशास्त्र, शिल्प तथा पाणिनि ने धार्मिक तथा लौकिक विषयों के समृद्ध साहित्य-भंडार का उल्लेख मिलता है। जिससे तत्कालीन पाठ्य का ज्ञान होना प्राप्त होता है। बौद्ध विहारों में बौद्ध दर्शन तथा पालि भाषा की शिक्षा दी गई। मौर्यकाल के पूर्व ही शिक्षा के प्रमुख केन्द्रों में तकनीकि शिक्षा की समुचित व्यवस्था की गई थी यदि ऐसा नहीं होता तो आयुर्वेद के अध्ययन के लिए जीवक को मगध से तक्षशिला नहीं भेजा जाता और न चन्द्रगुप्त को ही वहाँ जाकर रणविद्या सीखने की आवश्यकता पड़ती। व्यापारिक, शिल्पों की शिक्षा में व्यापार निगमों का प्रमुख हाथ था। क्योंकि इस युग में सभी शिल्पों की श्रेणियाँ बन गई थी और उनके अधिकार व्यापक थे। बिना अभ्यास के शिल्प-ज्ञान न तो पूर्ण हो पाता था और न उपयोगी। अतः कर्मशालाओं में छात्रों को अभ्यास का अवसर दिया जाता था। इस प्रकार हम पाते हैं कि बुद्धकाल में शिक्षा के विभिन्न अंगों की उल्लेखनीय प्रगति हुई।

निष्कर्ष → तक्षशिला - गान्धार प्रान्त की राजधानी थी, इस नगरी का उल्लेख रामायण में मिलता है, जिसके अनुसार भरत ने अपने पुत्र 'तक्ष' के नाम पर इसे बसाया था। बौद्ध काल में यह शिक्षा का प्रमुख केन्द्र हो गया। P.T.O.

P.T.O.

तथा इसकी कीर्ति विदेशों तक पहुँच गई थी। परिणामस्वरूप सहस्रों की संख्या में छात्र विदेशों से यहाँ अध्ययन हेतु आते थे, यही नगर हमारे देश की उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर स्थित होने के कारण युगों तक जिसका प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा।

शिक्षा →

शिक्षा पारिवारिक प्रणाली पर आधारित थी सहस्रों छात्र गुरुओं के यहाँ अध्ययन करते थे देश के दूर-दूर के भागों से यहाँ आकर विद्वान एकत्र हो गए थे, जिससे यह स्थान विद्या का मनोरम स्थल बन गया था। व्याकरण के विद्वान पाणिनी तथा चिकित्साशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान जीवक के तक्षशिला में ही शिक्षा प्राप्त की थी। महान राजनीतिज्ञ चाणक्य ने भी उच्च शिक्षा इस स्थल पर ही प्राप्त की थी।

गुरुकुल-गृह या विद्यालयों में प्रवेश 16 वर्ष की आयु में होता था।

पाठ्यक्रम —

तक्षशिला में प्रमुख रूप से उच्च शिक्षा प्रदान की जाती थी।। वेदान्त, व्याकरण, चिकित्सा, आयुर्वेद, अठारह शिल्प, लौकिक विद्या, ज्योतिष विद्या, वास्तु-कला, कृषि व्यापार सैनिक-शिक्षा सर्प दंश आदि मुख्य पाठ्य-विषय थे।

P.T.O.

P.T.O.

सैनिक शिक्षा प्रदान करने का यह ~~प्रमुख~~ प्रमुख केन्द्र था। भारतीय युद्धकला के अतिरिक्त यहाँ पर ग्रीक युद्ध कला के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था थी। पाठ्यक्रम में अध्ययन की विदेशी प्रणालियों को भी अपनाया गया था। वास्तव में तक्षशिला भारतीय तथा यूनानी संस्कृति का संगम था। हूणों के बर्बर आक्रमणों ने इस विद्या के केन्द्रों को पद-दलित कर दिया।

भारती कुमारी
16-04-2021
A.D.H.S.C

Scanned with CamScanner